ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-10*November- 2021
Innovation The Research Concept

रजा और ज्यामितीय रूप

Raza & Geometrical Form

Paper Submission: 15/11/2021, Date of Acceptance: 23/11/2021, Date of Publication: 24/11/2021

अनिल गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर,
चित्रकला विभाग,
राज कला महाविद्यालय,
कोटा,राजस्थान, भारत

प्रतिभा यादव
शोधार्थी,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर,राजस्थान, भारत

सारांश

रजा एक वस्तु निरपेक्ष कलाकार हैं। रजा की अमूर्त शैली की प्रमुख भाषा ज्यामितीय रूप ही है, जो उनके प्रकृति, भारतीय आध्यात्म से संबंधित विचारों को प्रकट करते हैं। त्रिभुज, वर्ग, आयत, वृत इत्यादि प्रतीक स्वरूप विभिन्न अर्थ लिए उनके चित्रों में उपसिथत हैं। बिन्दु उनके चित्रों का आकर्षण केन्द्र है। वृत के रूप में चांद, सूर्य बनकर सदैव प्रकाशमान रहा है। कभी बीज तो कभी अंकुरण बनकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है। त्रिभुज कभी पहाड तो कभी पेड बनकर प्रकृति को संबोधित करते हुए प्रतीत होते हैं।

Raza is an objective artist. The dominant language of Raza's abstract style is geometric forms, which reveal his ideas related to nature, Indian spirituality. Symbols like triangle, square, rectangle, circle etc. are present in their pictures for different meanings. Bindu is the center of attraction of his paintings. The moon in the form of a circle has always been shining like the sun. Sometimes it registers its presence by becoming a seed and sometimes a germination. Triangles sometimes appear as mountains and sometimes trees, addressing nature.

मुख्य शब्द: रजा, ज्यामितीय, अंकुरण, बिंदु, प्रकृति, कुंडलनी
Keywords: Raza, Geometrical, Germination, Bindu, Nature, Kundalini.

प्रस्तावना

आधुनिक कला के क्षेत्र में अपने कला कर्म के जरिये देश विदेश में अपनी पहचान बनाने वाले रजा का पूरा नाम सैयद हैदर रजा है जिनका जन्म मध्यप्रदेश के बावरिया नामक स्थान पर हुआ। 30 मार्च 1922 को जन्में रजा का नाम जब जहन में आता है तो मन के कैनवास पर विभिन्न ज्यामितीय आकार उभरने लगते हैं।

ज्यामितीय आकारों को अपने चित्रों में निरूपित करने की रजा की अपनी निजी शैली है। उनके सम्पूर्ण कला सृजन का मुख्य आधार ज्यामितीय रूप है जो उनके चित्रों की विशेषता भी है । जिसके कारण वे कलाकारों की भीड भाड में अपना पृथक अस्तित्व बनाने में सफल हुए रजा के सम्पूर्ण चित्र विधान को समझने से पूर्व उन स्त्रोतों, कारणों को कारणों का जानना आवष्यक है जिनसे प्रेरित होकर चित्र निर्माण के पथ पर अग्रसर हुंए। प्रकृति और बिंदु उनके चित्र निर्माण में प्रेरणादायक सिद्व हुए।प्रकृति के वन नदियां पहाड पेड, सूर्य,पर्वत ज्यामितीय आकारों में प्रत्येक स्वरूप उनके चित्रों में विधमान रहे हैं। ज्यामितीय आकारों द्वारा दृष्य जगत कि रहस्यमता को एक नयी कला भाषा के रूप में परिभाषित करते हैं

इनकी कृतियां अतीत की स्मृतियों का ही पुनर्निर्माण हैं जो कैनवास पर रंगों, ज्यामितीय आकारों के रूप में एक नये परिवेश में प्रकट होती हैं। मध्यप्रदेश के जंगल, कबीलों के नगाडों की धुन, सूर्य की प्रचण्ड किरणें, नर्मदा का पवित्र जल, रात का घना अंधकार रजा के बाल मन मस्तिष्क में हमेशा के लिए बस गए, और आजीवन कला सृजन हेतु प्रेरित करते रहे।

फ्रांस में अध्ययन के दौरान एकोल द बोजार में इसी चेतना को जीवित रखा।फ्रांस से तकनिकी सीखी लेकिन उनकी सोच की जडे भारत में फैली हुइ थी। रजा के चित्र विभिन्न ज्यामितीय आकारों से समृद्व हैं, लेकिन बिन्दु उनके चित्रों का मुख्य आकर्षण केन्द्र है। बिंदु उस बीज का वाहक है जिससे जीवन की अपार सम्भावनाऐं नीहित हैं।

यदि रजा के चित्रों का अध्ययन करें तो पायेंगे कि उनका कला संसार दो समानान्तर जिज्ञासाओं का प्रतिफल है प्रथम कल्पनाओं का शुद्व सुघट्य रूप तथा दूसरा विषय के रूप में प्रकृति का चुनाव, दोनों जिज्ञासाऐं एक जगह आकर एक बिन्दु पर मिल जाती हैं।बिन्दु मात्र गोला, सर्कल नहीं अपितु अस्तित्व और रचना का केन्द्र है। बिन्दु एक स्त्रोत सिम्बल है जो प्रतीक भी है और बीज भी। बीज से जीवन की उत्पत्ति हो ती है और सृष्टि की रचना होती है। (चित्र संख्या 1)

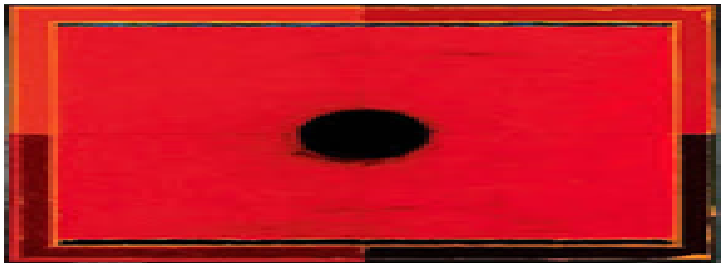

चित्र संख्या 1 रजा, बिन्दु, (1982) एक्रेलिक

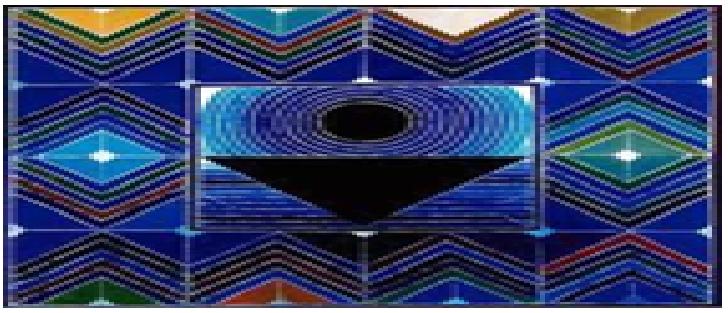

चित्र संख्या 2, रजा, अंकुरण में त्रिभुजाकृतियां

प्रारम्भ में रजा ने गांव, शहरी दृष्य बनाए बाद में फीगर, न्यूड, स्टिल लाइफ, पोटेट भी बनाए, लेकिन रजा हयूमन फीगर की अपेक्षा प्राकृतिक द्रश्य चित्रण सहजता से बनाते जो आगे उनकी प्रेरणा के स्त्रोत बने।रजा पोस्ट इम्प्रेशनिस्ट उत्तर प्रभाववाद कलाकार, गोगा, सेजान, वानगॉग के चित्रों से प्रभावित थे।

रजा ने जीवन पर्यन्त बिन्दु बीज पर निरन्तर नवीन प्रयोग किए। बिन्दु हर कलाकार में नये रंग, रूप, टेक्सचर के साथ प्रकट होता है। और अपने में कई अर्थ पहलुओं को साथ लाता है। बिन्दु का बनाने का तरीका चाहे अलग अलग हो लेकिन उनका प्रेरणा स्त्रोत एक बीज ही है। चित्रों में कभी कभी बिन्दु अंधेरे से उजाले की ओर तो कभी प्रकाश फैलाता प्रतीत होता है।

रजा के चित्रों में बिन्दु के साथ त्रिभुजाकृतियां भी बहुत दिखाई देती हैं उल्टी और सीधी दोनों त्रिभुजाकृतियों संयोजन में प्रयुक्त हुई हैं। ये त्रिभुजाकृतियां कभी एक दुसरे से मिलती हुइ कभी टकराती हुइ तो कभी पर्वतों की कतार सी नजर आती हैं। (चित्र संख्या 2)

ज्यामितीय आकारों के अत्यधिक प्रयोग पर तंत्रकला के प्रभाव जैसे प्रश्नों पर रजा का स्पष्ट रूप से खण्डन करते हुए कहते हैं कि ये ज्यामितीय आकार(त्रिभुज, वर्ग, वृत आयत इत्यादि) तंत्र कला से प्रेरित नहीं अपितु प्रकृति से प्रेरित हैं। चांद, सूरज बिन्दु जमीन है । तंत्र एक बहुत जटिल प्रक्रिया है और उसके बारे में मेरा ज्ञान सीमित है।

रजा की चित्राकृतियों का वर्णन रंगों के बिना अधूरा है। रजा के चित्रों में आकार यदि शरीर है तो रंग उसमें जान डालने का काम करते हैं । रजा एक्रेलिक, तेल रंग में समृद्ध चित्र रचनाऐं करते हैं। रजा आकारों की तरह रंगों का प्रयोग भी प्रतीकात्मक रूप में करते है। प्रत्येक रंग अपने में विशेष अर्थ लिए होता है। रजा के रंग प्रकृति के रंग हैं सूर्य की तेज चमक को देखकर यह अंदाजा लगया जा सकता है कि रजा के रंग इतने चमकदार क्यूं है। साथ ही चंद्रमा की रोषनी सी शीतलता भी उनके रंगों में चित्रों के द्वारा महसूस की जा सकती है। रजा के चित्रों मे ंरंग और आकार इस तरह से संयोजित हैं कि वे किसी भी स्थल पर पूर्ण कहे जा सकते है। रजा के चित्र उनकी रेखाओं के लिए नहीं उनके रंगों के लिए जाने जाते है।

उर्जा से परिपूर्ण ये रंग कभी एक दूसरे में मिलते हुए तो भी कभी एक दूसरे से दूर भागते प्रतीत होते है। जो मन में उठने वाले विभिन्न विचारों को प्रकट करते हैं। रजा का कार्य केवल रंग की उर्जा को कैनवास पर आकारों के साथ व्यवस्थित करना है।

रजा के चित्र सृजन की विकास यात्रा बहुत लंबी है। रजा 20 वीं और 21 वीं शताब्दी में कार्य करने वाले प्रमुख कलाकार हैं। रजा की कला रचना की शुरूआत बिन्दु से हुई फिर धीरे-धीरे नए आयाम जुडते गए और एक लम्बी चित्र श्रृंखला का निर्माण हुआ। रजा ज्यामितीय आकारों को सृजनात्मक रूप में स्वीकार करते हैं, रूढिवादिता के रूप में नहीं।
रजा की प्रमुख कृतियों में ब्लैक सन, 1953, बिन्दु 1982, अंकुरण 1986 सौराष्ट 1983 जर्मिनेशन 1987(चित्र संख्या 6) जला बिन्दु 1990(चित्र संख्या 7), चमत्कार 1996 ,कलियां 1990 ,बीज 1988, सूर्य नमस्कार, प्रकृति पुरूष

ब्लैक सन (चित्र. संख्या 3)1953 में बनायी गई यह पेंटिंग 45 गुणा 47 से.मी. आकार की एक्रेलिक माध्यम में बनायी गयी है। इसमें संसार को दो भागों काले, सफेद में में विभाजित दिखाया है जो संसार के दो पक्ष दिन रात, आशा-निराशा को उजागर करते हैं एक पंक्ति में बॉक्स जैसे घर वर्गाकार, घनाकार , खडी रेखाओं को काट कर बनाए गए हैं। नारंगी रोषनी में यह घर चमकते हुए प्रतीत होते है।

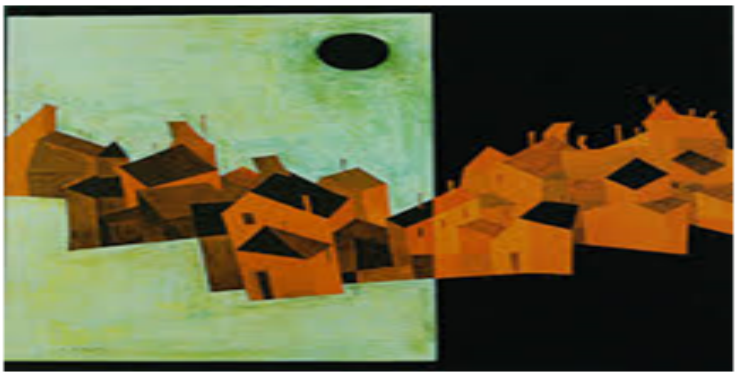

चित्र संख्या 3 रजा, ब्लैक सन, 1953, एक्रेलिक माध्यम

चित्र संख्या 4 रजा, अंकुरण, एक्रेलिक माध्यम

(चित्र संख्या 4) अंकुरण शीर्षक चित्र की रचना रजा ने बिन्दु चित्र से प्रेरित होकर की । 200 गुणा 200 से.मी. आकार का यह चित्र एक्रेलिक माध्यम में बनाया है। 16 चौखनों में चित्र धरातल को बांटकर खानों में नीले, हरे, काले लाल, गेरू रंगों को सपाट भरा गया है। चित्र निर्माण के पीछे प्रमुख प्रेरणा स्त्रोत प्रकृति ही है।

चित्र संख्या.5 रजा, कलियां, 1990

1990 में बनाया गया चित्र, कलियां (चित्र संख्या.5) 160 गुणा 180 से.मी. आकार का एक्रेलिक माध्यम में बना है। चित्र धरातल को दो भागों में बांटकर उपर वाले भाग को 9 चौखानों में बंाटा गया है जिसमे ंज्यामितीय आकारों में बनी ये गुनगुनाती कलियां हरे नीले रंग के मधुर संयोजन में अपनी मधुर मुस्कान बिखेरती नजर आ रही है। रंगों के संग शब्दों का चित्रात्मक संयोजन मन को मोहित किए बिना नहीं रहता है।

चित्र संख्या 6 रजा, जर्मिनेशन, 1987

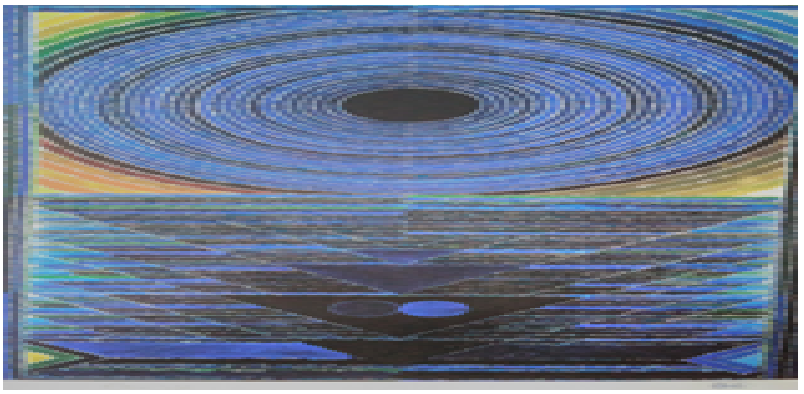

चित्र संख्या 7 रजा, जला बिन्दु, 1990

रजा एक लैंडस्केप चित्राकार थे, एक समय ऐसा भी था जब उनके पास अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए न कोई भाषा न ही आकार था लेकिन वर्षों के गहन अध्ययन के बाद उनके चित्रों में भावों को व्यक्त करने के लिए जगमगाते रंग, आकार उर्जा से भरा बीज है। अंकुरण प्रकट होने लगे जो उनकी आधि से अनन्त तक पहुंचने की कला यात्रा में सहायक सिद्व हुए । रजा के भावों को नयी भाषा रूप देने में ज्यामितीय आकारों की महत्ती भूमिका रही है।

21वीं शताब्दी में उनके काम को एक नई दिशा मिली । भारतीय आध्यात्म में विश्वाश होने के कारण रजा ने अपने विचारों को कुण्डलनी, नाग, महाभारत जैसे विषयों को चित्रित कर व्यक्त यकिए। इस समय बनाए गए प्रमुख चित्रों में कुण्डलिनी 2006, सूर्य एवं नाग 2007, प्रकृति पुरूष 2012, वितान 2013, वृक्ष 2015, विभास 2015, होली 2015, बिन्दु पंचतत्व 2013, साथ-साथ 2015 इत्यादि प्रमुख चित्र हैं।

(चित्र संख्या 8) कुण्डलिनी चित्र में पृष्ठभूमि में क्षितिज रूप में रंगाकार पट्टियां बनाई गइ हैं। केन्द्र में बडा वृत बनाया गया है, जिसमें लाल, हरी, काली नीली वृताकार रेखाऐं खींची गइ हैं। वृतकार भाग कुण्डली का प्रतीक है। वृत के केन्द्र में सफेद भाग मैं एक छोटा काला बिन्दु है जिसको दो सर्प घेरे हुए है साथ ही चित्र के मध्य में लम्बवत् रूप में छोटे बिन्दु नीले, लाल, हरे रंग में बनाये गया है।

(चित्र संख्या 9)में सूर्य और नाग चित्र 40 गुणा 74 इंच में नीलवर्णीय योजना में बनाया गया है। चित्र धरातल को मुख्यतः तीन तलों में विभाजित किया है। दांये भाग में नीले काले रंग के वृत बनाए गए हैं, काला भाग नाग के रूप में चित्रित है। चित्र के मध्य भाग में त्रिभुजाकृतियां निर्मित हैं, बांये भाग में क्षितिज रेखा द्वारा धरातल को दो भागों में बांटा गया है। उपर वाले भाग में सूर्य नारंगी रंग मैं विधमान है,

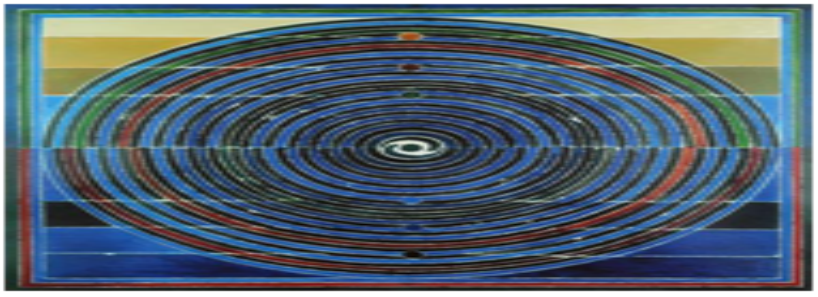

चित्र संख्या 8 रजा, कुण्डलिनी, 2006

चित्र संख्या 9 रजा, सूर्य और नाग 2007

रजा कम मगर तौल कर बोलने वाले कलाकार हैं। लेकिन यदि उनकी कृतियों के पीछे छिपे तथ्य को समझ लिया जाये तो वो बहुत कुछ कहती प्रतीत होती है। उनकी कृतियों के द्वारा उनके जीवन के सार को समझा जा सकता है। जो प्रकृति के इर्द गिर्द भारत में रमा हुआ है।
रजा के कला कर्म की यह विकास यात्रा 2016 में उनके देहान्त के साथ समाप्त हुई लेकिन हमारे मन मस्तिष्क में तथा कला जगत में सदैव अविस्मरत रहेगी।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य वस्तु निरपेक्ष कलाओं में ज्यामितीय रूपों की बढती उपयोगिता है। ज्यामितीय बीज गणित की एक शाखा है(वर्ग, वृत, त्रिभुज आदि) का गणित के क्षेत्र में महत्व होने के साथ-साथ कला के क्षेत्र में भी उपयोग बढ रहा है। ज्यामितीय आकारों के सौन्दर्य के आकर्षण से कलाकार भी अक्षूता नहीं रहा है, ज्यामितीय रूप आज की वस्तु निरपेक्ष कला का अभिन्न अंग है जिसका उपयोग आज का आधुनिक कलाकार विभिन्न विषयान्तर्गत अपनी निजी शैली में कर रहा है। रजा भी उनमें से एक हैं।

निष्कर्ष

ज्यामितीय रूप वस्तुनिरपेक्ष कलाओं के विकास में महत्वपूर्ण स्त्रोत के रूप में उभरकर सामने आया है। जिससे रजा ही नहीं अपितु अनेक कलाकार चाहे वह चित्रकार हो या मूर्तिकार प्रभावित रहे हैं। जैसेः-जी.आर.संतोष, स्वामीनाथन, मोहन शर्मा, विरेन डे, जहांगीर साबावाला इत्यादि प्रमुख कलाकार हैं जिन्होनें ज्यामितीय रूपों को अपनी व्यक्तिगत अमूर्त शैली में प्रयुक्त किया है, मूर्तिकारों ने भी इसे सहजता से अपनाया है, धनराज भगत, राजेन्द्र मिश्र, कन्हई कुन्हीरमण, सतीश गुजराल इत्यादि के मूर्ति शिल्पों में ये ज्यामितीय आकार देखे जा सकते हैं। आज की वस्तु निरपेक्ष कला के क्षेत्र में ज्यामितीय रूपों में अपार संभावनाऐं हैं, जिसमें कलाकार अपनी व्यक्तिगत शैली का प्रयोग करते हुए लगातार क्रियाशील हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *समकालीन कला 18 नव. 2000, ललित कला अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली, 110001।*
2. *वाजपेयी अषोक, कलापद्वति यष पब्लिकेषन चांद मोहल्ला, गांधी नगर दिल्ली, 2010।*
3. *समकालीन कला, नवम्बर 1984/मई 85, ललित कला अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली, 110001।*
4. *गांगुली डॉ मंजूषा, चित्रकार रजा, परम्परा और परिवेष, समानान्तर प्रकाषन, नई दिल्ली, 110002।*
5. *Bindu, Space and Time in Raja's Vision gectisem media Transasia India Limited. New Delhi, 110016A*
6. *www.theheritagelab.in≥sh-raja-art*
7. *http://projectartworm.com/Selectedwork/details/252/sh-raza-anku*
8. *https://www.artintaglio.in/ViewProdDetails.jsp?ProdId=2201&cateId=13*
9. *http://projectartworm.com/Selectedwork/details/252/sh-raza-ankuran*